अभ्यास पत्रक

पाठ – तुम कब जाओगे, अतिथि

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

1. गद्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"अब तुम लौट जाओ, अतिथि! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात हाईटाइम है। क्या तुम्हें तुम्हारी पृथ्वी नहीं पुकारती?"

1. लेखक अतिथि को 'उच्च समय' पर लौटने के लिए क्यों कह रहा है?

उत्तर - .....

2. 'तुम्हारी पृथ्वी' से क्या आशय है?

उत्तर - .....

3. लेखक के मन में अतिथि के लिए कैसा भाव है?

उत्तर - .....

2. कथन और कारण पर आधारित प्रश्न (Assertion-Reason) – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** लेखक अतिथि के आगमन से प्रसन्न था।
   कारण: उसने भोजन को डिनर की गरिमा दी और मीठा भी बनवाया।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की सही व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही
5. **कथन:** लेखक को अतिथि की लम्बी उपस्थिति खटकने लगी थी।
   कारण: अतिथि ने जाने की कोई बात नहीं की और कपड़े लॉन्ड्री में दे दिए।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की सही व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए – (5x1=5 अंक)

6. अतिथि के स्वागत में लेखक और उसकी पत्नी ने पहले दिन क्या विशेष किया?

उत्तर - .....
.....

7. लेखक को कब पहली बार चिंता हुई कि अतिथि अधिक रुकेगा?

उत्तर - .....
.....

8. लेखक की पत्नी की आँखें 'बड़ी' क्यों हो गई थीं?

उत्तर - .....
.....

9. लेखक ने अतिथि को 'राक्षस' जैसा क्यों कहा?

उत्तर - .....
.....

egyanarchive

10. लेखक ने 'गेट आउट' शब्द का उल्लेख क्यों किया?

उत्तर - .....

.....

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. लेखक के अनुसार 'देवता' और 'मनुष्य' में क्या अंतर होता है?

उत्तर - .....

.....

.....

12. लेखक के घर का वातावरण अतिथि के आने से किस प्रकार बदलता है?

उत्तर - .....

.....

.....

13. 'स्वागत-सत्कार का आखिरी छोर' पंक्ति का क्या तात्पर्य है?

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. लेखक की मनोवृत्ति अतिथि के प्रति आरंभ से अंत तक कैसे परिवर्तित होती है?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. 'अतिथि सत्कार की परंपरा और आधुनिक यथार्थ' – इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

eGyanArchive

उत्तर कुंजी

1. क्योंकि अब अतिथि के अधिक दिन रुकने से लेखक असहज हो गया है।
2. 'तुम्हारी पृथ्वी' का अर्थ है अतिथि का अपना घर।
3. शुरुआत में स्नेहपूर्ण, बाद में खीझ और असहायता से भरा।
4. (क)
5. (क)
6. उन्होंने विशेष भोजन बनाया जिसमें मिठाई भी शामिल थी।
7. जब अतिथि ने कपड़े धोने की बात कही।
8. क्योंकि पत्नी को यह लगा कि अतिथि अभी और दिन रुकेगा।
9. क्योंकि अतिथि की उपस्थिति अब बोझिल और असहनीय हो चुकी थी।
10. लेखक संकेत देना चाहता है कि अतिथि को अब विनम्रता से चले जाना चाहिए।
11. देवता अल्प समय के लिए आते हैं और दर्शन देकर चले जाते हैं; मनुष्य देर तक रुकता है और व्यवहारिक सीमाएँ बन जाती हैं।
12. शुरुआत में प्रसन्नता और उत्साह था, बाद में चुप्पी, बोरियत और असंतोष व्याप्त हो गया।
13. लेखक द्वारा किया गया अधिकतम आतिथ्य – जैसे सिनेमा दिखाना – जिसके बाद और कुछ करने की गुंजाइश नहीं थी।
14.

लेखक की मनोवृत्ति आरंभ में एक उत्साही मेज़बान की थी। उसने अतिथि के स्वागत में विशेष भोज बनवाया, प्रेमपूर्वक बातें कीं, सैर-सपाटा करवाया। पर जैसे-जैसे दिन बीतते हैं और अतिथि लौटने का नाम नहीं लेता, लेखक की भावना बदलती जाती है। उसका उत्साह समाप्त होता है, बोरियत घर करने लगती है, और अंततः लेखक के भीतर असहजता, खीझ और मनोविकल्पनाएँ जन्म लेती हैं। वह अब मन ही मन अतिथि के जाने की प्रतीक्षा करता है, और अंत में स्पष्ट रूप से यह कहने को मजबूर होता है – "तुम कब जाओगे, अतिथि?" यह मानसिक परिवर्तन हास्य और व्यंग्य के माध्यम से सुंदर रूप में उभरा है।

15.

भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता का स्थान दिया गया है। "अतिथि देवो भव:" जैसे सूत्र इसी भावना को दर्शाते हैं। अतिथि के आगमन को घर में शुभ माना जाता है और उसके स्वागत-सत्कार में कोई कसर नहीं छोड़ी जाती। परंतु बदलते समय में जब जीवन की गति तेज़ हो गई है, खर्चे अधिक और समय सीमित है, तब यह परंपरा व्यावहारिक कठिनाइयाँ उत्पन्न करती है। आज के युग में मेहमानों का लंबे समय तक बिना पूर्व सूचना रुके रहना असुविधा का कारण बनता है। इस स्थिति को लेखक "तुम कब जाओगे, अतिथि" में व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। यह रचना आधुनिक जीवन में पारंपरिक मूल्य और यथार्थ के टकराव को दर्शाती है। इसमें यह प्रश्न उठाया गया है कि अतिथि सत्कार की मर्यादा क्या है, और अतिथि को कब समझना चाहिए कि वह अब बोझ बन गया है। यह लेखन हास्य के साथ सामाजिक चेतना को भी जगाता है।